IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"सह षिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन"

श्री राजेंद्र सिंह
शोधकर्ता
भोपाल नोबल यूनिवर्सिटी उदयपुर

1. सार :–

शिक्षा का आधार ही व्यक्तित्व का विकास है। षिक्षा का अर्थ ही मानव के में छिपे हुए प्राकृतिक गुणों का विकास करना है। बालक व बालिकाएं ईष्वर की सर्वोत्तम कृति है। उनके विकास के लिए घर में माता–पिता, विद्यालय में षिक्षक और समाज की हर इकाई, बाल सेवी संस्थाएं एवं प्रेरक साहित्य की संयुक्त भूमिका है। इनमें से एक ही भूमिका विघटित होती है, तो बालक का सामाजिक दृष्टि से विकास अवरूद्ध हो जाता है और व्यक्तित्व कुंठित। परिवार यानि माता–पिता बच्चें के व्यक्तित्व निर्माण की पहली पाठषाला है। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में माता–पिता के त्याग, धैर्य, साहस, परिश्रम आदि वे सूत्र है, जिनके द्वारा उनमें आत्मविष्वास भरा जा सकता है। अध्यापक अपने षिक्षण के साथ साथ विद्यार्थियों को वे बाते भी सिखायें या बताये, जो उनके जीवन का विकास करने में उनके व्यक्तित्व को परिष्कृत करने में समर्थ है।

प्रस्तुत षोध पत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर सह–षिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालयों के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। जिसमें षोध के न्यादर्ष का चुनाव यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। न्यादर्ष के रूप में 300 विद्यार्थियों को चुना गया। जिनमें से 100 सह–षिक्षा 100 बालक तथा 100 बालिका विद्यालयों के विद्यार्थियों को चुना गया। आंकडों के विष्लेषण के लिए एनोवा (थ)परीक्षण का प्रयोग किया गया। अतः सहषिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

2 षोध का षीर्षक :–

''सह षिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन''

3 पृष्ठभूमि :–

व्यक्तित्व आधुनिक मनोविज्ञान का बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रमुख विषय है। व्यक्तित्व के अध्ययन के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार का पूर्व कथन भी किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विषेष गुण या विषेषताएँ होती है जो दूसरे व्यक्ति में नहीं होती है। इन्ही गुणों एवं विषेषताओं के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे से भिन्न होता है। व्यक्तित्व एक स्थिर अवस्था न होकर एक गत्यात्मक समष्टि है। जिस पर परिवेष का प्रभाव पड़ता है और इसी कारण से उसमें बदलाव आ सकता है। व्यक्ति का समस्त व्यवहार उसके वातावरण या परिवेष में समायोजन करने के लिए होता है। आज समाज में जो वातावरण बच्चों को मिल रहा है वहाँ नैतिक मूल्यों के स्थान पर भौतिक मूल्यों को महत्व दिया जाता है। भौतिक सुख–सुविधाओं का अधिक से अधिक अर्जन ही व्यक्तित्व का मानदण्ड बन गया है।

विद्यार्थियों में व्यक्तित्व का विकास जिन जिन दषाओं में होता है, उसे व्यक्तित्व का आयाम कहते है। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आयामों के आधार पर व्यक्तित्व का विकास है। शारीरिक विकास हर व्यक्ति में अलग–अलग मात्रा में होता है, जो शारीरिक ग्रन्थियों पर निर्भर करता है। मानसिक आयाम वंषानुक्रम से जो योग्यताएं प्राप्त होती है, उनका मानसिक विकास पर अलग ही प्रभाव दिखाई देता है। सामाजिक आयाम सामाजिकता के आधार पर ही व्यक्ति में दयालुता, सहिष्णुता, निर्देयता, कौषलता, कठोरता आदि गुणों का विकास होता है। संवेगात्मक आयाम सभी व्यक्तियों में अनेकों प्रकार के संवेग होते है, लेकिन उन सबकी तीव्रता अलग होती हे।

यदि व्यक्तित्व को सही ढंग से परिष्कृत एवं प्रकाषित करना है तो निष्चित ही इसके आगामी स्वरूप को नये सिरे से गढ़ना और ढालना होगा।

4 अध्ययन के उद्देष्य :– ६

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर सह षिक्षा, बालक व बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की मानसिकता का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर सह षिक्षा, बालक व बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिकता का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर सह षिक्षा, बालक व बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मकता का अध्ययन करना।

5. षोध की परिकल्पनाएँ–

1. सह षिक्षा बालक तथा बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य मानसिकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. सह षिक्षा बालक तथा बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य सामाजिकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. सह षिक्षा बालक तथा बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

6. षोध प्रविधियाँ :–

1. **विधि :–**प्रयुक्त षोध में षोधकर्त्री द्वारा व्यक्तित्व आयामों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
2. **जनसंख्या :–**जयपुर षहर के सहषिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन जनसंख्या के रूप में किया गया।
3. **न्यादर्ष :–**न्यादर्ष के अन्तर्गत यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए जयपुर जिले के सहषिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालय के 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी (300)	सह षिक्षा विद्यालय के विद्यार्थी	100
	बालक विद्यालय के विद्यार्थी	100
	बालिका विद्यालय के विद्यार्थी	100

4. **उपकरण :–**इसके अन्तर्गत षोधकर्त्री द्वारा तीन आयाम क्रमषः मानसिक, सामाजिक व संवेगात्मक के आधार पर स्वनिर्मित व्यक्तित्व मापनी का निर्माण किया गया। विष्वसनीयता का मापन परीक्षण व पुनः परीक्षण द्वारा निकाला गया व प्रष्नावली को पाँच विषेषज्ञो द्वारा जाँच करवाकर वैधता निकाली गई। इसमें प्रष्नों की संख्या 40 रखी गई है।

7. प्रदत्त संचयन :–

- षोध में प्रयुक्त व्यक्तित्व मापनी से संबंधित मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आयामों के आधार पर स्वनिर्मित प्रष्नावली बनाई गई।
- इसके पष्चात् स्वनिर्मित व्यक्तित्व प्रष्नावली का परीक्षण प्रपत्र को तैयार किया गया।
- इस परीक्षण प्रपत्र की वैधता ज्ञात करने के लिए मनोविज्ञान के पॉच विषेषज्ञों के पास भेजा गया व विष्वसनीयता की जाँच के लिए उच्च माध्यमिक स्तर पर सह–षिक्षा बालक तथा बालिका

विद्यालय के विद्यार्थियों पर परीक्षण तथा पुनः परीक्षण किया गया तथा प्राप्तांक पुनः प्राप्त किये जो कि घनात्मक पाये गये।

- ततपष्चात् इस परीक्षण प्रपत्र पर न्यादर्ष पर प्रयोग किया गया व प्रपत्र को एकत्रित कर लिया गया।
- इसके पश्चात् 5 रेटिंग स्केल के आधार पर अंक दिये गये।
- अंको के आधार पर प्राप्त परिणामें का विष्लेषण किया गया।

8. प्रदत्त विष्लेषण :–

परिकल्पना 1

सहषिक्षा बालक तथा बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियो के मध्य मानसिकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

ैवनतबम वि टंतपंदबम	कि	ै	डै	थ्तंजपव	त्मेनसज
।उवदह ळतवनच	;।.1द्ध 3.1 त्र 2	697ण्14	348ण्57	3ण्83	अस्वीकृत
ैपजीपद ळतवनचे	छ.ज्ञ 300.3 त्र 297	27020ण्63	90ण्98		
ज्वजंस	299				

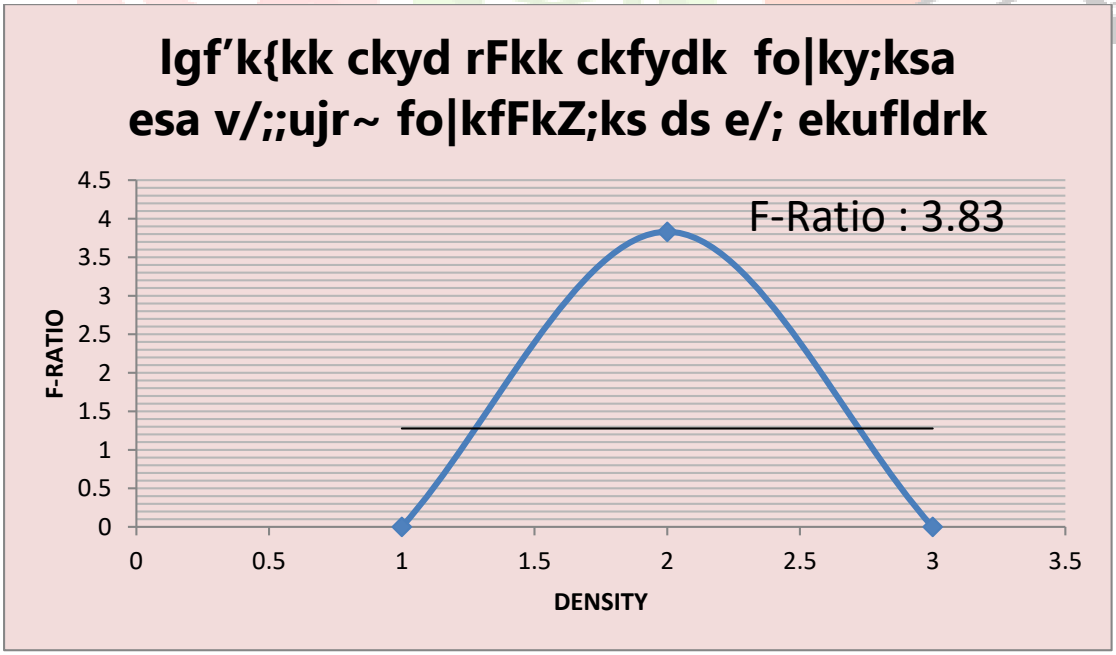

व्याख्या : –

तालिका संख्या 1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सह षिक्षा बालक तथा बालिका विद्यालय में विद्यार्थियों की मानसिकता से सम्बन्धित आंकडों को प्रदर्षित करती है। डीएफ –299 का एफ मान 3. 83 प्राप्त हुआ है। डीएफ –299 का सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त एफ तालिका शून्य 3.77 है। गणना से प्राप्त मान 3.83 सारणी से प्राप्त मान 3.77 से अधिक है। इस प्रकार बनायी गई शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

विष्लेषण :–

संभवत सह षिक्षा विद्यालय से बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों में मानसिकता के अन्तर पाया गया है। सहषिक्षा विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों में बुद्धिलब्धि का अभाव पाया गया है।

परिकल्पना 2

सहषिक्षा बालक तथा बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य सामाजिकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

ैवनतबम वि टंतपंदबम	कि	ै	डै	थ्ंजपव	त्मेनसज
।उवदह ळतवनच	;।.1द्ध 3.1 त्र 2	1301ण्45	650ण्52	3ण्86	अस्वीकृत
ॅपजीपद ळतवनचे	छ.ज्ञ 300.3 त्र 297	19741ण्62	168ण्73		
ज्वजंस	299				

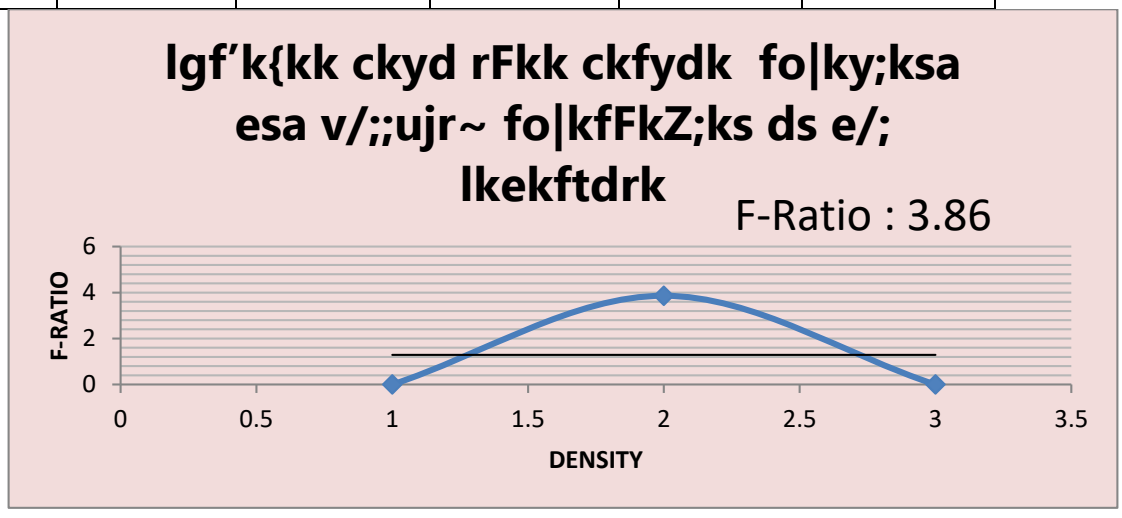

व्याख्या : –

तालिका संख्या 2 उच्च माध्यमिक स्तर अध्ययनरत् सहषिक्षा बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य सामाजिकता से सम्बन्धित आंकडों को प्रदर्षित करती है। डीएफ –299 का डीएफ का मान 3.86 प्राप्त हुआ है। डीएफ –299 व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त तालिका मूल्य 3.77 से अधिक है। इस प्रकार बनायी गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

विष्लेषण :–

संभवत सहषिक्षा के विद्यार्थियों की तुलना में बालक व बालिका के विद्यार्थियों सामाजिक भागीदारी कम पायी जाती है। सामाजिक कार्यक्रम समाज से सम्बन्धित कार्य सहायता की भावना बालक व बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों में सहषिक्षा विद्यालय की तुलना में कम पायी जाती है। अतः बालक से बालिका विद्यालय में सामाजिकाता का अभाव पाया गया।

परिकल्पना 3

सहषिक्षा बालक तथा बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

ैवनतबम वि टंतपंदबम	कि	ै	डै	थ्त्ंजपव	त्मेनसज
।उवदह ळतवनच	;ा.1द्ध 3.1 त्र 2	1481ण्31	740ण्65	5ण्16	अस्वीकृत
ॅपजीपद ळतवनचे	छ.ज्ञ 300.3 त्र 297	16803ण्29	143ण्62		
ज्वजंस	297				

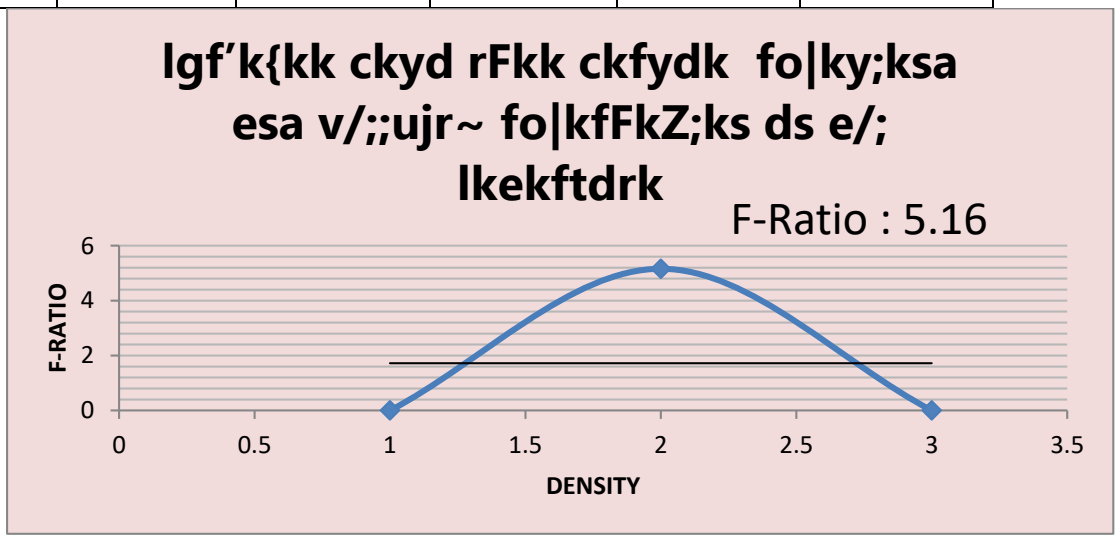

व्याख्या : –

तालिका संख्या 3 में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सह षिक्षा बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक से सम्बन्धित आंकडों को प्रदर्षित करती है। डीएफ –299 का एफ का मान 5.16 प्राप्त हुआ। डीएफ–299 व सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी से प्राप्त एफ तालिका मूल्य 3.77 है। गणना से प्राप्त मान 5.16 सारणी से प्राप्त मान 3.77 से अधिक है। इस प्रकार बनायी गई शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

विष्लेषण :–

संभवत सहषिक्षा विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगों में तुलनात्मक अंतर पाया गया है। बालक व बालिका विद्यालय में विद्यार्थियों में संवेगो पर नियंत्रण रखने की आवष्यकता है। बालक व बालिका विद्यार्थियों में संवेगो का अभाव पाया गया है।

परिणाम :–

सहषिक्षा विद्यालय के विद्यार्थियों बालक विद्यालय तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों में मानसिकता, सामाजिकता तथा संवेगात्मकता में अन्तर पाया गया है। सहषिक्षा विद्यालय के विद्यार्थियों ने बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक अंक प्राप्त किये।

9. परिणामों की विवेचना :–

- **परिकल्पना – 1**उच्च माध्यमिक स्तर पर सहशिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य मानसिकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

  निष्कर्ष :–उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सहशिक्षा, बाल तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य मानसिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें सहशिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य मानसिकता में अन्तर पाया गया है।

- **परिकल्पना –2**उच्च माध्यमिक सतर पर सहशिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य सामाजिकता मे सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

  निष्कर्ष :– उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सहशिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य सामाजिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसमें सहशिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य सामाजिकता में अन्तर पाया गया है।

❖ **परिकल्पना –3**उच्च माध्यमिक स्तर पर सहशिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष :–उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सहशिक्षा, बालक तथा बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें तीनों विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक अन्तर पाया गया है।

10. षैक्षिक निहितार्थ :–

1. विद्यालय का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए कि बालक व बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों का सामाजिक, मानसिक, संवेगात्मक व षैक्षिक रूप से समायोजिक बनाने व पूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर सके।
2. बालक व बालिकाओं के सम्मुख दृढ़ता एवं जिज्ञासा उत्पन्न करने वाले उदाहरण व कहानी आदि को प्रस्तुत करना चाहिए।
3. प्रत्येक बालक व बालिका को मानसिक क्षमता के अनुसार कार्य देना चाहिए।
4. षिक्षकों को बालक व बालिकाओं के साथ इस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए कि बालक व बालिकाएँ अपनी समस्या बताने में हिचकिचाएँ नहीं।
5. षिक्षकों को बालक व बालिकाओं के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

11. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

(1) अग्रवाल, नीतू (2007) : ''षैक्षिक सांख्यिकी'', राधा प्रकाषन मन्दिर, आगरा।

(2) अग्निहोत्री, रविन्द्र(2008) : ''आधुनिक भारतीय षिक्षा समस्याएँ एवं समाधान'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

(3) आहूजा, राम (2008) : ''सामाजिक समस्याएँ'', रावत पब्लिकेषन, जयपुर।

(4) बैस, डॉ० नरेन्द्र सिंह (2006) : ''षैक्षिक एवं उदीयमान भारतीय समाज'', जैन प्रकाषन मन्दिर, जयपुर।

(5) बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (1959) : ''रिसर्च इन एजुकेषन'', हावर ब्रदर्स, न्यूयॉर्क।

(6) चौबे, डॉ० सरयू प्रसाद (2008) : ''तुलनात्मक षिक्षा'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

पत्र–पत्रिकाएँ

(1) राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र 7 जनवरी, 2018.

(3) भारतीय वैज्ञानिक औद्योगिक अनुसन्धान पत्रिका अभिगमन तिथि जून, 2017.

(4) इण्डियन जर्नल्स ऑफ मेडिकल रिसर्च, सितम्बर, 2014.

(5) जर्नल्स ऑफ पब्लिक ट्रांसपोर्टेषन, दिसम्बर, 2012.

(6) मेरठ ग्लोब न्यूज पत्रिका सितम्बर, 2015.

(7) दैनिक समाचार पत्र 11 जनवरी, 2018.

(8) नव समाचार पत्र हरियाणा, दिसम्बर, 2016.

WEBLIOGRAPHY

- www.bekonomike.com
- www.slideshare.net
- www.financialwing.com
- https://ebanking-ch.ubs.com
- https://ebanking.efginternational.com